आगम युग का जैनदर्शन (फोल्डर नं. 1049)

મુખ્ય ટાઈટલ

प्रकाशकीय
दो शब्द द्वितीय आवृत्ति के अवसर में
लेखक की ओर से
प्रकाशकीय
ग्रन्थानुक्रमणिका
संकेतसूची
प्रकरण 1-आगम साहित्य की रूपरेखा 1-36
1. पौरुषेयता और अपौरुषेयता 3
2. श्रोता और वक्ता की दृष्टि से 5
3. आगमों के संरक्षण में बाधाएँ 11
4. पाटलीपुत्र-वाचना 14
5. अनुयोग का पृथक्करण और पूर्वो का विच्छेद 16
6. माथुरी वाचना 18
7. वालभी वाचना 19
8. देवर्धिगणिका पुस्तक लेखन 19
9. पूर्वो के आधार से बने ग्रन्थ 20
10. द्वादश अंग 22
दिगम्बर मत से श्रुत का विच्छेद 22
11. अंगबाह्य ग्रन्थ 23
दिगम्बरों के 23
स्थानकवासी के 24
श्वेताम्बरों के 26
12. आगमों का रचनाकाल 27
13. आगमों का विषय 31
14. आगमों की टीकाएँ 32
15. दर्शन का विकासक्रम 35
प्रकरण 2-प्रमेय खण्ड
1. भगवान् महावीर से पूर्व की स्थिति 37-124
(1) वेद से उपनिषत् पर्यन्त 39
(2) भगवान बुद्ध का अनात्मवाद 45
(3) जैन तत्त्वविचार की प्राचीनता 50
2. भगवान् महावीर की देन अनेकान्तवाद 51
(1) चित्रविचित्र पक्षयुक्त पुस्कोकिलका स्वप्न 52

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. विभज्यवाद 53
4. अनेकान्तवाद 58
(1) भगवान बुद्ध के अव्याकृत प्रश्न 59
(2) लोक की नित्यानित्यता सान्तानन्तता 62
(3) लोक क्या है? 64
(4) जीव-शरीर का भेदाभेद 64
(5) जीव की नित्यानित्यता 67
(6) जीव की सान्तता-अनन्तता 72
(7) भ. बुद्ध का अनेकान्तवाद 74
(8) द्रव्य और पर्याय का भेदाभेद 76
(अ) द्रव्यविचार 76
(ब) पर्यायविचार 78
(क) द्रव्यपर्याय का भेदाभेद 84
(9) जीव और अजीव की एकानेकता 86
(10) परमाणु की नित्यानित्यता 87
(11) अस्ति-नास्तिका अनेकान्त 89
5. स्याद्वाद और सप्तभंगी 92
(1) भंगों का इतिहास 93
(2) अवक्तव्य का स्थान 99
(3) स्याद्वाद के भंगों की विशेषता 101
(4) स्याद्वाद के भंगों का प्राचीन रूप 105
6. नय, आदेश या दृष्टियाँ 114
(1) द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव 115
(2) द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक 117
(3) द्रव्यार्थिक-प्रदेशार्थिक 118
(4) ओधादेश-विधानादेश 120
(5) व्यावहारिक और नैश्चयिक नय 120
7. नाम स्थापना द्रव्य भाव 122
प्रकरण 3-प्रमाणखण्ड 125-165
1. ज्ञान चर्चा की जैन दृष्टि 127
2. आगम में ज्ञान-चर्चा के विकास की भूमिकाएँ 128
3. ज्ञान-चर्चा का प्रमाणचर्चा से स्वातन्त्र्य 135
4. जैन आगमों में प्रमाण चर्चा 136
(1) प्रमाण के भेद 136
(2) प्रत्यक्षप्रमाणचर्चा 145
(अ) इन्द्रियप्रत्यक्ष 146

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(आ) नोइन्द्रियप्रत्यक्ष 146
(3) अनुमानचर्चा 147
(अ) अनुमान के भेद 147
(आ) पूर्ववत् 148
(इ) शेषवत् 151
(1) कार्येण 151
(2) कारणेन 151
(3) गुणेन 151
(4) अवयवेन 152
(5) आश्रयेण 152
(ई) दृष्टसाधर्म्यवत् 154
(उ) कालभेद से त्रैविध्य 155
(ऊ) अवयव चर्चा 156
(ऋ) हेतुचर्चा 159
(4) औपम्यचर्चा 159
(1) साधर्म्यो पनीत 159
(अ) किञ्चित्साधर्मोयपनीत 160
(आ) प्रायः साधर्म्योपनीत 160
(इ) सर्वसाधर्म्योपनीत 160
(2) वैधर्म्योपनीत 160
(अ) किञ्चिर्द्वधर्म्य 160
(आ) प्रायोवैधर्म्य 160
(इ) सर्ववैधर्म्य 160
(5) आगमचर्चा 161
(अ) लौकिक आगम 161
(आ) लोकोत्तर आगम 161
प्रकरण 4-जैन आगमों में वाद और वादविद्या 167-202
1. वाद का महत्त्व 169
2. कथा 175
3. विवाद 177
4. वाददोष 178
5. विशेषदोष 179
6. प्रश्न 181
7. छलजाति 182
(1) यापक 183
(2) स्थापक 185

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) व्यंसक 185
(4) लूषक 186
8. उदाहरण-ज्ञात-दृष्टांत 188
(1) आहरण 189
(1) अपाय 189
(2) उपाय 190
(3) स्थापनाकर्म 191
(4) प्रत्युत्पन्नविनाशी 192
(2) आहरणतद्देश 192
(1) अनुशास्ति 192
(2) उपालम्भ 193
(3) पृच्छा 193
(4) निश्रावचन 194
(3) आहरणतद्दोष 194
(1) अधर्मयुक्त 194
(2) प्रतिलोभ 195
(3) आत्मोपनीत 196
(4) दुरुपनीत 196
(4) उपन्यास 197
(1) तद्वस्तूपन्यास 197
(2) तदन्यवस्तूपन्यास 197
(3) प्रतिनिभोपन्यास 198
(4) हेतुपन्यास 198
प्रकरण 5-आगमोत्तर जैनदर्शन 203-278
प्रास्ताविक 205
(अ) वाचक उमास्वाति की देन 205
प्रास्ताविक 205
1. प्रमेयनिरूपण 207
1. तत्त्व, अर्थ, पदार्थ, तत्त्वार्थ 207
2. सत् का स्वरूप 208
3. द्रव्य, पर्याय और गुण का लक्षण 210
4. गुण और पर्याय से द्रव्य वियुक्त नहीं 213
5. कालद्रव्य 213
6. पुद्गलद्रव्य 214
7. इन्द्रियनिरूपण 217
8. अमूर्त द्रव्यों की एकत्रावगाहना 217

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. प्रमाणनिरूपण 217
1. पंच ज्ञान और प्रमाणों क समन्वय 217
2. प्रत्यक्ष-परोक्ष 218
3. प्रमाणसंख्यान्तर का विचार 219
4. प्रमाण का लक्षण 220
5. ज्ञानों का स्वभाव और व्यापार 220
6. मति-श्रुतिका विवेक 221
7. मतिज्ञान के भेद 222
8. अवग्रहादि के लक्षण और पर्याय 223
3. नयनिरूपण 226
प्रास्ताविक 226
1. नयसंख्या 227
2. नयों का लक्षण 227
3. नूतन चिन्तन 228
(ब) आचार्य कुन्दकुन्द की जैनदर्शन को देन 231
प्रास्ताविक 231
1. प्रमेयनिरूपण 233
1. तत्त्व-अर्थ, पदार्थ और तत्त्वार्थ 233
2. अनेकान्तवाद 234
3. द्रव्य का स्वरूप 234
4. सत् = द्रव्य = सत्ता 235
5. द्रव्य, गुण और पर्याय का सम्बन्ध 236
6. उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य 238
7. सत्कार्यवाद-असत्कार्यवाद का समन्वय 240
8. द्रव्यों का भेद-अभेद 241
9. स्याद्वाद 242
10. मूर्तामूर्तविवेक 243
11. पुद्गलद्रव्यव्याख्या 244
12. पुद्गलस्कन्ध 244
13. परमाणुचर्चा 245
14. आत्मनिरूपण 246
(1) निश्चय और व्यवहार 246
(2) बहिरात्मा-अन्तरात्मा-परमात्मा 248
(3) परमात्मवर्णन में समन्वय 248
(4) जगत्कर्तृत्व 250
(5) कर्तृत्वाकर्तृत्वविवेक 250

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(6) शुभ-अशुभ-शुद्ध अध्यवसाय 252
15. संसार वर्णन 252
16. दोष वर्णन 253
17. भेदज्ञान 257
2. प्रमाणचर्चा 258
प्रास्ताविक 258
1. अद्वैत दृष्टि 258
2. ज्ञान की स्व-परप्रकाशकता 260
3. सम्यग् ज्ञान 261
4. स्वभाव ज्ञान और विभाव ज्ञान 262
5. प्रत्यक्ष-परोक्ष 262
6. ज्ञप्तिका तात्पर्य 263
7. ज्ञानदर्शन योगपद्य 264
8. सर्वज्ञका ज्ञान 264
9. मतिज्ञान 265
10. श्रुतज्ञान 266
3. नयनिरूपण 267
1. व्यवहार और निश्चय 267
(क) आचार्य सिद्धसेन 270
1. सिद्धसेन का समय 270
2. सिद्धसेन की प्रतिभा 271
3. सन्मतितर्क में अनेकान्त स्थापन 272
4. जैन न्यायशास्त्रों की आधारशिला 275
परिशिष्ट
1. दार्शनिक साहित्य का विकास क्रम 279-292
1. आगम युग 281
2. अनेकान्त व्यवस्था युग 285
3. प्रमाण व्यवस्था युग 288
4. नव्यन्याय युग 291
2. आचार्य मल्लवादी और उनका नयचक्र 293-318
1. मल्लवादी का समय 296
2. नयचक्र का महत्त्व 297
3. दर्शन और नय 300
4. सर्वदर्शनसंग्राहक जैनदर्शन 301
5. नयचक्र की रचना की कथा 302
6. कथा का विश्लेषण 304

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. नयचक्र और पूर्व 304

8. नयचक्र की विशेषता 307

9. नयचक्र का परिचय 309

3. पारिभाषिक और विशेष नामों की सूची 1-35

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org